Hindi Murli Quiz 18-08-2015

.

Q.1) सच्चा तपस्वी वह है जो सदा _____ की पोजीशन में रहता है।

A. फ़रिश्ता स्वरुप
B. आत्मिक स्थिति
C. विश्व कल्याण
D. सर्वस्व त्यागी

Q.2) सवेरे-सवेरे उठ यही चिंतन करो कि .....

A. मैं इतनी छोटी-सी आत्मा कितने बड़े शरीर को चला रही हूँ, मुझ आत्मा में अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है |
B. यह नया ज्ञान है, कितनी बुद्धि चाहिए इसको ग्रहण करने की। और एक्ट में आना चाहिए।
C. बाबा कितना मीठा है। आत्माओं को भी बहुत मीठा बनाते हैं। आत्मा कोई भी अकर्तव्य कार्य न करे - यह प्रैक्टिस करनी है।
D. नष्टोमोहा होना है, सारी दुनिया से। यह शरीर तो खत्म होना है। तो उनसे मोह निकल जाना चाहिए ना।

Q.3) Match the following

	Choice	Match
A	स्वयं को जो हैं जैसे हैं-वैसे ही बाप के आगे प्रत्यक्ष करना	यही सबसे बड़े से बड़ा चढ़ती कला का साधन है।
B	बुद्धि पर जो अनेक प्रकार के बोझ हैं	उन्हें समाप्त करने की यही सहज युक्ति है।
C	ऑनेस्ट बन स्वयं को बाप के आगे स्पष्ट करना अर्थात्	पुरूषार्थ का मार्ग स्पष्ट बनाना।
D	कभी भी चतुराई से मनमत और परमत के प्लैन बनाकर	बाप वा निमित्त बनी हुई आत्माओं के आगे कोई बात रखते हो-तो यह ऑनेस्टी नहीं।
E	ऑनेस्टी अर्थात् जैसे बाप जो है जैसा है बच्चों के आगे प्रत्यक्ष है,	वैसे बच्चे बाप के आगे प्रत्यक्ष हों।

Q.4) इनमें से सही वाक्यों का चयन करें -

A. यह नया ज्ञान है, कितनी बुद्धि चाहिए इसको ग्रहण करने की। और एक्ट में आना चाहिए। जिन्हों ने शुरू से बहुत भक्ति की होगी वही अच्छी रीति धारण कर सकेंगे। यह समझना चाहिए-अगर हमारी बुद्धि में ठीक रीति धारणा नहीं होती है, तो जरूर शुरू से हमने भक्ति नहीं की है।
B. सतयुग में तो तुम यहाँ की प्रालब्ध पाते हो। वहाँ कभी उल्टी मत मिलती ही नहीं। अभी की श्रीमत ही अविनाशी बन जाती है, जो आधाकल्प चलती है।
C. बाबा कहते रहते हैं तुम कौड़ियों पिछाड़ी क्यों हैरान होते हो। कौड़ियां भी जास्ती थोड़ेही चाहिए। गरीब झट समझ जाते हैं।
D. तुम भी ज्ञान सागर से निकली हो फिर सब वहाँ चली जायेंगी, जहाँ वह रहते हैं, वहाँ तुम आत्मायें भी रहती हो।
E. कोई बड़ा आदमी होगा तो उनको यहाँ बैठने की दिल नहीं होगी। जहाँ बड़े-बड़े आदमी सन्यासी गुरू आदि लोग होंगे वहाँ की बड़ी-बड़ी सभाओं में जायेंगे।

Q.5) यहाँ तो देखो पैसे के पीछे कितनी मारामारी है। रिश्वत कितनी मिलती है। पैसे तो मनुष्यों को चाहिए ना। तुम बच्चे जानते हो बाबा हमारा खजाना भरपूर कर देते हैं। आधाकल्प के लिए जितना चाहिए उतना धन लो, परन्तु पुरूषार्थ पूरा करो। गफलत नहीं करो। कहा जाता है ना फालो फादर। फादर को फालो करो तो यह जाकर बनेंगे। नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी, बड़ा भारी इम्तहान है। इसमें जरा भी गफ़लत नहीं करनी चाहिए। बाप श्रीमत देते हैं तो फिर उस पर चलना है। कायदे कानून का उल्लंघन नहीं करना है। श्रीमत से ही तुम श्री बनते हो। मंजिल बहुत बड़ी है। अपना रोज़ का खाता रखो। कमाई की या नुकसान किया? बाप को कितना याद किया? कितने को रास्ता बताया? अन्धों की लाठी तुम हो ना। तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है।

A. True
B. False

Q.6) इनमें से गलत वाक्यों का चयन करें -

A. नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश - यह तो ब्रह्मा का ही काम है। बाप ही आकर ब्रह्मा द्वारा प्रजा रच नई दुनिया की स्थापना कर रहे हैं।
B. बहुत भक्ति करने वालों के पिछाड़ी, कम भक्ति करने वाले लटकते रहते। उनकी महिमा गाते हैं।
C. बाप कहते हैं कुछ भी नहीं समझते हो तो बाप से पूछो क्योंकि बाप है अविनाशी सर्जन।
D. चेक करना है कि मेरे से कोई अकर्तव्य तो नहीं होता है? शिवबाबा भी अकर्तव्य कार्य करेंगे |
E. आत्मा की महिमा है , शरीर की महिमा नहीं होती है। आत्मा तमोप्रधान है तो शरीर की भी महिमा नहीं।

Explanation: आत्मा की महिमा है तो शरीर की भी महिमा होती है। आत्मा तमोप्रधान है तो शरीर की भी महिमा नहीं। चेक करना है कि मेरे से कोई अकर्तव्य तो नहीं होता है? शिवबाबा कभी अकर्तव्य कार्य करेंगे? नहीं। नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश - यह तो बाप का ही काम है। बाप ही आकर ब्रह्मा द्वारा प्रजा रच नई दुनिया की स्थापना कर रहे हैं।

Q.7) Match the following

	Choice	Match
A	इस शरीर में जो आत्मा है, उनको परमपिता परमात्मा बैठ पढ़ाते हैं।	कितनी समझने की बातें हैं। परन्तु फिर भी धन्धे आदि में जाने से भूल जाते हैं।

B	यह अविनाशी आत्मा को अविनाशी बाप द्वारा अविनाशी मत मिलती है।	वह विनाशी शरीरधारियों को विनाशी शरीरधारियों की ही मत मिलती है।
C	जहाँ सब आत्मायें आती हैं, वह हमारा घर है।	वहाँ शरीर ही नहीं तो आवाज़ कैसे हो।
D	कितना मोह रहता है शरीर में।	अभी तुम समझते हो नष्टोमोहा होना है, सारी दुनिया से।
E	लोन अथवा किराये पर मकान लेते हैं तो उसमें भी मोह रहता है।	बाप तो इस शरीर में होते भी देही-अभिमानी है।